लिपि प्रकाशन
1, अंसारी रोड, नई दिल्ली-110 002

श्रीकृष्ण

मूल्य : रु० 24.00

© मुद्राराक्षस

प्रथम संस्करण : 1984

प्रकाशक
लिपि प्रकाशन
1, अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली-110 002

मुद्रक : ग्रन्थशिल्पी द्वारा नागरी प्रिंटर्स, दिल्ली-32

SHABDA DANSH (Short Stories) By Mudraraksha

शब्द-दंश

युद्ध

□

—अभी नहीं आये ! पति ने खिड़की से अलग हटते हुए ऊबकर कहा।

पत्नी ने कोई जवाब नहीं दिया। बस, वह चुपचाप अपने बालों को संवारती रही, गोया कोई मेहमान आने वाला हो। बाल संवार चुकने के बाद उसने अपने होठों को सावधानी से रंगा और उंगली में बचा हुआ रंग अपने मुलायम गालों पर रगड़ने लगी। पति उकताकर फिर उसी खिड़की पर जा खड़ा हुआ। एक बार उसने बाहर झांककर देखने की कोशिश की, लेकिन दूर कहीं जोरदार धमाका हुआ और उसने गरदन खिड़की के अन्दर कर ली। बीवी हंस पड़ी। पति ने हंसी सुनी, लेकिन अन्दर उलटकर नहीं देखा।

—आयेंगे जरूर ! पत्नी ने जैसे उसे सान्त्वना दी। पति ने कोई जवाब नहीं दिया।

आयेंगे ही। जब सारे शहर के लोग कह रहे थे, तो सही ही होगा। शहर खाली भी हो चुका है। जिन्हें भागने का मौका नहीं मिला। वे कहीं न कहीं छिपने की कोशिश में थे। लेकिन वह जानता था कि अब छिपना बेकार था, भागना भी बेकार ही था।

अचानक एक साथ कई धमाके हुए और कमरे की खिड़की का शीशा टूटकर नीचे आ रहा। पति खिड़की से अलग हुआ और एक कुरसी के तकिये से सिर टिकाकर आ बैठा।

क्या इतने धीरे-धीरे आगे बढ़ते हैं लोग ? एक धमाका और हुआ और इस बार उसका सारा मकान हिल गया। कमरे में बुरी तरह धल भर गयी। इस कदर धूल भर गयी कि उसे देर तक कुछ भी दिखाई नहीं दिया। वह

खुद कुरसी से नीचे आ गिरा था। धीरे-धीरे उठकर उसने धूल झाड़ी और कमरे में निगाह दौड़ायी। उसकी बीवी उसी तरह आईना हाथ में लिए अपना चेहरा संवार रही थी। पति ने उधर से निगाह हटा ली। फिर जैसे उसे कुछ याद आ गया हो, इस तरह वह बाहर की ओर भागा। थोड़ी देर में वह लौटा।

—मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि जब इधर से कोई मुकाबिला नहीं किया जा रहा है, तो फिर वे लोग इस तरह गोलाबारी क्यों कर रहे हैं ?

वह जैसे अपने आपसे बोला।

—उनकी मरजी ! पत्नी ने लापरवाही से कहा—यह भी मुमकिन है कि वे लोग सिर्फ यह बताने के लिए ही गोले चला रहे हों कि वे आ रहे हैं। आखिर वे यहां बाजे बजाते हुए तो आ नहीं सकते !

—लेकिन फिर वे आते क्यों नहीं ?—पति ने चिढ़कर कहा।

—शायद वे सचमुच बहुत धीरे-धीरे आ रहे हों, या फिर डर-डरकर आगे बढ़ रहे हों।

कई घण्टे के इन्तजार के बाद बाहर की ओर कुछ आहटें हुईं—वे आ गए ! पति ने कहा।

इस बार उसने देखा कि पत्नी के शरीर में एक अजीब कम्प हुआ जैसे किसी ने उसकी पीठ पर पंजे गड़ा दिए हों। मेकअप के नीचे उसके चेहरे की खाल सफ़ेद पड़ गयी। उसने कुछ बोलना चाहा, लेकिन बोली नहीं। वह कमजोर-सी लगने लगी और फिर धीरे से वहीं फर्श पर बैठ गयी।

—क्या तुम्हें डर लग रहा है ? पति ने पूछा।

—नहीं पत्नी ने कहा। लेकिन तुरन्त ही उसके पीले चेहरे पर एक खिचाव आया और एक हाथ से पेट मरोड़ते हुए उसने फर्श की धूल पर उलटियां कर दीं। इसके बाद वह थोड़ा सुस्थिर हो गयी। चेहरे का पीलापन भी कम हो गया।

पति ने उठकर वहां, जहां उल्टी की गयी थी, दरवाजे के पास की धूल डाल दी। धूल डालकर वह पलटा ही था कि दरवाजे पर कई छायाएं दीखीं। उनके हाथों में स्टेनगनें थीं। पति एक क्षण के लिए जड़ हो रहा, लेकिन फिर धीरे-धीरे पीछे की ओर खिसकने लगा।

कमरे की अभ्यस्त हो चुकी आंखों ने अब पत्नी को भी देख लिया। वरदीधारी लोगों में से पीछे की ओर से कोई उल्लास से चीखा। सामने वाले आदमी ने सख्त आंखों से चीखने वाले को देखा। वह खामोश हो गया।

सामने वाला आदमी थोड़ा-सा आगे आया और पति से बोला—डरने या भागने की जरूरत नहीं है, बल्कि मैं यह यकीन दिलाना चाहता हूं कि अगर हमारी मदद तुमने अच्छी तरह की, तो हम तुम्हें कुछ इनाम भी देंगे।

इसी बीच पीछे के कुछ सैनिकों में हलचल हुई। शायद और ज्यादा लोग आ गए थे।

—हेई, औरत ! औरत ! वे चिल्लाये।

बीवी थोड़ी विचलित-सी हुई, लेकिन फिर संभल गयी। सधी आवाज में सामने वाले अफसर जैसे आदमी से बोली—ये लोग तुम्हारे ही सिपाही हैं ?

—हां, अफसर ने कहा।

—तुम इन्हें अनुशासन में नहीं रह सकते ? वह बोली।

सैनिक जैसे उत्तेजित होकर आगे लपके। सामने के दो-तीन सैनिकों ने मोटी-सी गाली भी दी। अफसर अचानक उनकी ओर घूमा और कड़कती आवाज में उसने उन लोगों को नियन्त्रित रहने का आदेश दिया। सैनिकों में क्षोभ उमड़ आया।

—यह लूट का माल है। हम इसे लेंगे ! वे चिल्लाये।

—बाहर निकल जाओ ! अफसर दहाड़ा।

सैनिक धीरे-धीरे पीछे हटते हुए बाहर निकल गए। बाहर पहुंचकर किसी ने उस औरत और अफसर को लेकर भोंडी-सी गाली दी। क्षुब्ध अफसर लपककर बाहर गया, लेकिन तब तक वे सभी कहीं गायब हो चुके थे। अफसर उस औरत की ओर लौटा। और अब उसे अचानक यह लगा कि उस कमरे में कोई औरत है और वह एक विजेता सैनिक अफसर है। औरत की ओर उसने ध्यान से देखा। औरत के चेहरे पर कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। भय भी नहीं था वहां और तिरस्कार या आवाहन भी नहीं

था। सिर्फ एक भावशून्य चेहरा। उस बीच पलकें भी झपकती नहीं दीखीं उसे। औरत के संवारे हुए बालों पर गर्द की एक तह जम गयी थी, कपड़ों पर भी गर्द थी। फिर भी औरत कम खूबसूरत नहीं थी।

अफसर अनचाहे ही उसकी ओर बढ़ा और उसने हाथ बढ़ाकर उसके कपड़ों पर पड़ी गर्द झाड़नी शुरू कर दी। औरत के चेहरे से लेकर उसके शरीर तक में कहीं कोई जुम्बिश नहीं हुई। अफसर ठहर गया। फिर एक बार उसने उसके बालों की गर्द को फूंक मारकर उड़ाया। गर्द का भबका उसकी आंखों में भर गया। आंखें मलता हुआ वह अलग हट गया। अब उसकी निगाह औरत के पति पर पड़ी।

—गधा ! मेरी सूरत क्या देख रहा है ! घर में खाने का जो भी सामान हो, लेकर आ ! वह उसके पति पर गरजा। पति तेजी से अंदर की ओर लपका। तभी उसने फिर कहा—और देखो, भागने की कोशिश मत करना। वरना सारे शहर में मेरी फौज है, गोली मार दी जायेगी। और हां, खाने के बारे में ज्यादा चालाकी दिखाने की कोशिश मत करना।

पति आदेश लेकर फिर उधर ही लौट चला। उसके जाते ही जैसे वह मूरत की तरह खड़ी औरत हिली। अफसर ने देखा उसे हिलते। वह और ज्यादा हिली और फिर सहसा बाहर की ओर भागी। पलक मारते वह उसकी ओर झपटा और उसे कमर से इस तरह पकड़ लिया, गोया किसी भागती हुई सांपिन को पकड़ लिया हो। औरत ने बल खाया और उसने ठीक किसी सर्पिणी की तरह ही अफसर की कलाई में अपने दांत धंसा दिये। अफसर की बाहें ढीली हो गयीं, लेकिन उसने औरत की कमर पर एक घूंसा मारा। औरत चीखी नहीं,कराही भी नहीं, बल्कि उसने दोनों हाथों के नाखून भी उसके चेहरे पर खरोंच दिये। लेकिन इससे ज्यादा कुछ नहीं हुआ। जल्दी ही लम्बे-चौड़े अफसर ने उसे काबू में ले लिया। औरत हांफती रही और तीखी निगाहों से अफसर की ओर घूरती रही। अफसर व्यंग्य से मुसकराया। उसकी मुसकराहट अभी सिमटी भी नहीं थी कि औरत ने उस पर थूक दिया। ठीक चेहरे पर। नाक के बीचों बीच। बहुत-सा थूक अफसर के चेहरे पर चिपक गया और औरत हंसने लगी।

अफसर ने थूक को पोंछा नहीं, ज्यों का त्यों रहने दिया। औरत के

हांफने से और हाथ पीछे की ओर जकड़े होने से उसकी छातियों का उभार और ज्यादा वहशी हो उठा था। तभी अफसर ने अपना एक हाथ मुक्त कर लिया। मुक्त हुए हाथ से उसने एक झटके से औरत के कपड़े नोंच लिए। सामने की ओर से नुच आए कपड़ों के नीचे से उसकी भरी हुई, सुडौल, सफेद छातियां दीखने लगीं—कांपती हुई। वह एक-एक कर उसके कपड़े इस तरह चीरता गया, जैसे उसकी खाल उतार रहा हो। एक-एक धज्जी उसने चीरकर अलग फेंक दी। और फिर उत्तेजित हाथों से भींचकर उसके होंठों का उसने गहरा चुम्बन लिया। उस आक्रोशी चुम्बन के बाद अफसर के चेहरे के अलग होते ही औरत ने फिर थूक दिया। अफसर बेहद उत्तेजित हो चुका था। उसने औरत को उठा लिया और पास की कुरसी की ओर ले चला।

कुरसी पर बैठे अफसर के सीने से चिपकी औरत की अधखुली आंखों में पीछे के दरवाजे से उभरती एक परछाईं पड़ी। वह उसका पति था। औरत ने आंखें बन्द कर लीं। पति के दोनों हाथों में प्लेटें थीं। थोड़ी देर तक वह वहीं दरवाजे पर ठिठका खड़ा रहा।

अफसर ने औरत के नंगे शरीर को दो-एक बार जोर-जोर से भींचने के बाद झटके से अलग किया और नीचे लुढ़का दिया। गिरी हुई औरत धीरे-धीरे उठकर बैठ गयी—वहीं। फर्श पर, ज्यों की त्यों।

पति प्लेटों के साथ अंदर आ गया। अफसर ने अपनी स्टेनगन उठायी और अपनी गोद में रख ली। इसके बाद वह प्लेटों पर टूट पड़ा। वह खाता रहा, किसी बहुत भूखे पशु की तरह और पति पानी का गिलास लिए उसके खा चुकने का इन्तजार करता रहा और बीवी ज्यों की त्यों, अनावृत्ता, उनमें से किसी को भी देखे बिना देखती रही। अफसर, खा चुकने के बाद अभी पानी पी ही रहा था कि दरवाजे पर फिर शोर उभरा। वही तमाम सैनिक फिर आ धमके थे।

—बाहर जाओ! अफसर चीखा।

—सर···

—सर···

—हमें समूचे शहर में सिर्फ चार औरतें मिलीं, जो इस कदर बूढ़ी हो

चुकी हैं कि कुत्ता भी उन्हें खा नहीं सकता! एक सैनिक ने साहस करके कहा।

"आपका काम हो चुका है, इस औरत को हम चाहते हैं। दूसरे ने पीछे से चिल्लाकर कहा।

औरत उसी तरह, बिना किसी झिझक के, उठकर खड़ी हो गयी थी। उसकी बांह पकड़कर बैठाते हुए अफसर ने कहा—मैं कह रहा हूं कि यहां से चले जाओ, वरना गोली मार दूंगा!

—सर!

—सर, हमें यह औरत दे दीजिए, हम चले जायेंगे।

अफसर क्षोभ से उठ खड़ा हुआ। लेकिन वह बोल कुछ भी नहीं सका। पुतली की तरह खूबसूरत वह औरत धीरे-धीरे उस भीड़ की ओर बढ़ी। उनके करीब जाकर वह रुकी। सैनिक दो क्षण के लिए खामोश, उसके नंगे शरीर को देखते रहे, फिर जैसे उनमें तूफान आ गया। वे सारे के सारे एक साथ उस पर टूट पड़े। कितनी ही बांहों में होता हुआ औरत का सुनहला-गुलाबी शरीर उनके बीच कभी-कभी इस तरह चमक जाता था जैसे बाढ़ के गंदले पानी में किसी बच्चे का खिलौना डूबता-उतरता-सा बह रहा हो।

अफसर थोड़ी देर भीड़ की उद्दाम तरंगें देखता रहा और फिर अपनी स्टनगन हाथ में लेकर सैनिकों से कतराता हुआ बाहर निकल गया। भीड़ में देर तक पता नहीं चला कि औरत कहां है: पति चुपचाप एक ओर दीवार से, किसी काक्रोच की तरह चिपका हुआ खड़ा रहा। धीरे-धीरे कोलाहल कम होने लगा और एक-एक कर सैनिक एक किनारे आकर अपनी पतलूनें बांधने लगे। किसी की निगाह औरत के भयभीत पति की ओर गयी। देखे जाने के बाद जाने किस आशंका से पति जल्दी-जल्दी अंदर के कमरे की ओर भाग गया।

एक अंधेरे कोने में सिमटा हुआ वह बाहर के कमरे का कोलाहल सुनता रहा। थोड़ी देर के बाद कोलाहल कम होने लगा। ऐसा लग रहा था जैसे अब दो-चार लोग ही वहां हों। उनकी फोश गालियां भी उसे अब सुनायी दे रही थीं। और कुछ देर बाद जैसे सभी कुछ खामोश हो गया।

थोड़ा-सा ठहरकर वह धीरे-धीरे बाहर की ओर चला। बहुत चुप-

चाप। बाहर कोई नहीं था। बस, फर्श पर पत्नी का उजला शरीर बिखरा हुआ था। वह शायद बेहोश थी। उसने उसके शरीर को हिलाया। पत्नी ने आंखें खोल दीं। एक बार उसने आसपास देखा और फिर उठने लगी। पति ने सहारा देना चाहा, लेकिन उसने सहारा नहीं लिया। किसी लकड़ी के शरीर की तरह वह उठी और चलकर कुरसी पर आ बैठी। जड़। भावहीन। पति ने उसके शरीर को निकट से एक बार देखा और फिर लपकता हुआ अन्दर चला गया। अन्दर से वह एक चादर और एक तौलिया ले आया। दोनों चीज उसने बीवी की बांहों में डाल दीं और खिड़की पर जा खड़ा हुआ।

बाहर बेहद वीरानी थी। कहीं कोई आवाज सुनाई नहीं दे रही थी। खिड़की के बाहर देखते-देखते ही वह जैसे अपने आप से, लेकिन ऊंची आवाज में बोला—क्या यह अच्छा नहीं होगा कि अभी हम लोग चुपचाप बाहर निकल जायें ?

—किसलिए ? पत्नी ने कहा।

इसके बाद वे खामोश हो गए।

शहर में रोशनी नहीं थी। कहीं भी रोशनी नहीं थी। बीवी ने कपड़े पहन लिए थे। पति तब से अब तक उस खिड़की से हटा नहीं था। वह हटा तब, जब उसे कमरे के अन्दर फिर भारी-भारी बूटों की रौंद सुनायी दी।

वही अफसर था। इस बार उसके साथ कुछ और ऐसे आदमी थे, जो बिल्कुल बुत की तरह काम कर रहे थे। और उनके भी पीछे एक आदमी था, जिसने नागरिकों जैसे कपड़े पहन रखे थे। उन्होंने बड़े आदर से औरत का अभिवादन किया। अफसर बड़ी शालीनता से आगे आया और बोला —हम आपको थोड़ी-सी तकलीफ देना चाहते हैं और हमें आशा है कि आप हमें मुआफ करेंगी।

अफसर ने अपने साथ के नागरिकों जैसे कपड़े पहने आदमी से पूछा —यहीं ठीक रहेगा, या बाहर? बाहर अभी थोड़ी-सी चांदनी है।

—बाहर ही बुला लीजिए, उस आदमी ने कहा।

—आपको तकलीफ तो होगी, लेकिन आप जरा-सी देर के लिए बाहर आ जाइए अफसर ने विनय से कहा।

औरत उठ खड़ी हुई। उसकी कुरसी एक सिपाही ने उठा ली और उसे बाहर ले आया। दो कुरसियां और आ गयीं। एक पर औरत बैठ गयी और बाकी दोनों पर अफसर और वह नागरिक वेशवाला आदमी।

अफसर ने कहा—देखिये, मेरे साथ यह आये हैं हमारे यहां के एक मशहूर पत्रकार। यह आपका बयान लेना चाहते हैं। उस बयान को हम तमाम दुनिया के अखबारों में छपवायेंगे। रेडियो से भी ब्राडकास्ट करायेंगे। आपको सिर्फ यह बताना है कि हमारे आने से पहले यहां जो शासन था, वह कितना जालिम था और उसने आपके साथ क्या-क्या जुल्म किए। उसमें आप यह भी कह सकती हैं कि यहां की पुलिस ने आपके साथ बलात्कार तक किया।

हमें कोई बयान नहीं देना है। आप जो चाहें, अपनी तरफ से लिख-कर छाप दीजिए। औरत ने सधी आवाज में कहा।

नागरिक वेशवाला आदमी क्षुब्ध हो उठा। बोला—देखो, लड़की, मैं यहां मशविरा लेने नहीं आया हूं। सेना का मामला है। ज्यादा बातों की जरूरत नहीं है। सीधी-सी बात अगर तुम्हारे दिमाग में आ जाती है, तो ठीक है, वरना हम दूसरा रास्ता अपनायेंगे।

थोड़ी देर खामोशी छायी रही, इसके बाद धीमी आवाज में औरत ने पूछा—मैं यह भी कह सकती हूं कि तुम लोगों ने क्या किया है ?

—नहीं। कतई नहीं !

टेपरिकॉर्डर चलने लगा। धीरे-धीरे घूमती चर्खियों के पार देखती हुई औरत बड़ी सावधानी से एक-एक बात, जैसी कही गयी थी, उसी तरह बोलती चली गयी। तोते की तरह सभी बातें, सारी ही बातें उसने कहीं। जो भी जरूरी था। आखीर में उसने यह और जोड़ दिया कि उसके साथ दुश्मन के इन सिपाहियों ने जितना अच्छा सलूक किया है, उसका आभार वह मानती है।

टेपरिकॉर्डर चला गया। और लोग भी चले गये। सिर्फ एक पहरेदार स्टेनगन लिये उन लोगों से थोड़ी दूर खड़ा रहा। अफसर औरत के करीब आया। औरत उठकर खड़ी हो गयी। अफसर ने मुसकराहट को होंठों पर फैलाते हुए कहा—शुक्रिया !

औरत भी हलकेसे मुसकरायी। फिर उसने कहा—अब आप जाना चाहेंगे, या फिर मैं यहां से जाऊं ?

—मेरा खयाल है कि हम दोनों ही यहां से चलें। अफसर ने कहा और औरत की बांह पकड़कर बड़े आदर से मकान की ओर लौट चला।

—वह सो रहा है ? पति ने धीमी आवाज में पूछा।

—नहीं, जाग तो चुका है, लेकिन थकान उतार रहा है। पत्नी ने कहा और मेज पर प्याले सजाने लगी।

—तुम कॉफी देख लो, मैं मेज ठीक करता हूं। पति ने कहा।

लेकिन पत्नी अपना काम करती रही। पति वहीं एक कुरसी पर बैठ गया। देर तक कोई नहीं बोला। फिर न जाने कैसे पति अपने आपसे बोल पड़ा—मैं समझता हूं कि हमारी सेनाएं जरूर वापस लौटेंगी और हमें मुक्त करेंगी।

—किससे मुक्त करेंगी ? पत्नी ने पूछा।

—इस दुर्भाग्य से।

—कौन-सा दुर्भाग्य ?

—यही, शत्रुओं के इन सैनिकों के अत्याचार का दुर्भाग्य।

"इसमें ऐसी क्या बात है, जो वैसे नहीं होती है ? कौन-सी ऐसी नाजायज बात की है इन लोगों ने ? औरत ने तिक्त होकर पूछा।

—यह तुम कह रही हो ? तुम, जिसके साथ दुश्मनों की एक पूरी सेना ने बलात्कार किया है। पति क्षोभ से बोला।

—बलात्कार ! लेकिन उन्होंने हमें गोली तो नहीं मारी ! बलात्कार ···बलात्कार तुम नहीं करते ? बोलो, तुमने नहीं किया बलात्कार ? और इस उजड़े शहर में कौन नहीं करता यह ?

—तो तुम समझती हो कि यह अच्छा हुआ ? पति ने आंखें झुका-कर कहा।

—बुरा क्या हुआ ? इससे अच्छा होता क्या ?

—चलो, ठीक है। देखो, शायद कॉफी बन गयी हो। पति ने कहा और फिर जैसे बिना किसी अपेक्षा के बोला—आज भी शायद वह रहेगा। आज रात भी वह यहीं सोयेगा न।

पत्नी ने जवाब नहीं दिया। उठकर वह कॉफी लाने चली गयी।

पति ज्यों का त्यों बैठा रहा। पत्नी कॉफी की केतली लेकर लौटी। जाने क्यों उसके वापस आने पर पति उसकी ओर देखकर मुसकराया। पत्नी नहीं मुसकरायी। वह निराश हो गया। सिर झुकाकर बोला—मैं नहीं समझता कि हमें मुसकराना भी क्यों नहीं चाहिए।

—किसी ने मना तो नहीं ही किया ! हां सुनो, कल ये सैनिक यहां से अगले शहर की ओर बढ़ रहे हैं। यह अफसर भी चला जायेगा। फिर तो हम शायद···

दरवाजे पर अफसर अंगड़ाई लेता हुआ खड़ा दीखा। दोनों खामोश हो गये। अफसर मुसकराकर बोला—गुडमॉर्निंग।

पत्नी मुसकरायी और पति ने अभिवादन में सिर झुका दिया।

अफसर मेज पर, औरत के करीब वाली कुरसी पर आकर बैठ गया। कॉफी और नाश्ते के सामान को प्यार से देखते हुए बोला—दोस्त, मैं आपका बहुत शुक्रगुजार हूं। यह अच्छा खाना···अच्छा···मेरा मतलब है ···आपकी यह खूबसूरत बीवी···हां···

अचानक इतना भयानक धमाका हुआ कि मकान एक बार हिल गया और सामने के गिरे हुए हिस्से की बची-खुची दीवार भी ढह गयी। अफसर ने झटके से औरत को खींचकर मेज के नीचे कर दिया। धमाके रुके नहीं। एक पर एक गोले आते रहे और ऐसा लगने लगा जैसे समूचे शहर को रुई की तरह धुना जा रहा हो। अफसर तेजी से निकलकर भागा। पति एक कोने में भुस भरे हुए जानवर की तरह टिका रहा और पत्नी मेज के नीचे छिपी रही। उनके मकान पर गोले नहीं आये, लेकिन नीचे की समूची धरती इस तरह हिल रही थी, गोया बार-बार भूचाल आ रहा हो। धुआं बारूद धूल और दीवारों के बीच घिरे दो निष्क्रिय लोग। दोनों में से कोई कुछ भी नहीं बोला। किसी को यह नहीं पता था कि धूल के उस अंधेरे में दूसरा कैसा है। शायद सारे दिन इसी तरह गोलाबारी होती रही हो, या बीच में रुक भी गयी हो। लेकिन यह जरूर मालूम है कि दोनों ही लगभग इस इन्तजार में रहे कि कोई गोला सीधे उन्हीं पर आयेगा और उनकी धज्जियां उड़ा देगा। पर ऐसा हुआ नहीं। हां, धमाकों से उपजी

जड़ता और इन्तजार···किसी भी घटना के इन्तजार से उनके पलकों में भारीपन आया और फिर वे दोनों सो गए।

अंधेरा बहुत ज्यादा था। मुमकिन है कि धुएं और धूल की वजह से इतना अंधेरा हो, या फिर रात ही इतनी घिर आयी हो। गोलाबारी बिल्कुल थम चुकी थी। पति जागकर कुछ देर ज्यों का त्यों बैठा रहा, फिर जैसे उसे विश्वास हो गया कि रात हो चुकी है। रात तो हो चुकी है, लेकिन वह ?

क्या वह अफसर लौट आया होगा ? या इस नींद के बीच किसी गोले ने उसकी जान ले ली होगी ? वह धीरे-धीरे रेंगा। उसे थोड़ी ही दूर रेंगना पड़ा। उसकी हथेलियों के नीचे एक गरम, मुलायम शरीर महसूस हुआ। वही थी। उसी का शरीर था। लेकिन उसके कपड़े। इस हालत में तो नहीं थी वह, जब सुबह गोलाबारी शुरू हुई थी। क्या वह अफसर भी यहीं है ?

वह पत्नी के शरीर को छोड़कर अंधेरे में ही और आगे तक किसी दूसरे का शरीर टटोलने लगा। पीछे से उसे एक हंसी सुनायी दी। उसकी पत्नी ही हंसी थी।

—किसे खोज रहे हो ? उसने हंसते हुए कहा—उस अफसर को ?

—अं ? नहीं, नहीं तो···।

—कोई नहीं है यहां। कोई आया भी नहीं। पत्नी ने अंधेरे में उठते हुए कहा—बात यह है कि मुझे डर लग रहा था इस गोलाबारी से। बहुत डरी हुई थी। लेकिन सुनो, अजीब ही बात है कि जैसे ही मैंने अपने कपड़े उतारने शुरू किये, मेरा डर भी कम हो गया।

पति को अब डर लगने लगा था। वह सरककर पत्नी के करीब आ गया। उसने दबी आवाज में कहा—मेरा खयाल है कि आज अब कोई नहीं आयेगा। आज तो सिर्फ···

एकाएक बाहर मशीनगनों से गोलियां चलने लगीं—बहुत तेजी से और चारों ओर से। साथ ही छोटे-छोटे गोले भी फट रहे थे।

—यह स्थिति बहुत ही खतरनाक है। पति ने कहा—जल्दी करो, हम लोग पीछे के कमरे के तहखाने में उतर चलते हैं। जल्दी आओ···।

पत्नी हंसी—"मैं जानती हूं। मुझे मालूम है। तुम डर रहे हो कि

शायद फिर मौका न मिले। खैर, तुम भी अपने कपड़े उतार दो। डर नहीं लगेगा और फिर तहखाने में चलकर लेटते हैं।

पति ने अभी कपड़े उतारने की तैयारी ही शुरू की थी कि बाहर आसमान पर इस तरह का उजाला फैलने लगा, जैसे एक साथ बिजली चमक रही हो। और फिर उसे लोगों का शोर भी सुनायी देने लगा।

पति के हाथ जहां के तहां रुक गये। फिर वह हताश होकर वहीं बैठ गया।

इस बार ज्यादा इन्तजार नहीं करना पड़ा उन्हें। दुश्मन को पीछे धकेलते हुए उनके अपनी ओर के सैनिक शहर में आ पहुंचे थे। एक-एक मकान की खिड़की और दरवाजे पर मशीनगनों से गोलियां मारते हुए वे आगे बढ़ रहे थे। एक-एक मकान के अन्दर से दुश्मनों का सफाया करना था उन्हें। मकानों के अन्दर सैनिकों को भूख भी लग आती थी और जो कुछ भी हाथ आता था, उसे अपने लिए चुन लेते थे, क्योंकि उन्हें मालूम था कि उन्हें कई रोज यहां इसी तरह बिताने होंगे।

और तभी उन्हें मिले ये दोनों प्राणी। अफसर कोई भी साथ नहीं था। संख्या उनकी बहुत थोड़ी थी। दुश्मनों का भय भी था। इसलिए उनमें से एक आदमी दरवाजे की ओर खड़ा हो गया अपनी स्टेनगन लेकर और बाकी जल्दी-जल्दी अचानक, आशा के विपरीत मिल गयी इस औरत पर टूट पड़े। किसी ने धक्का देकर पति को एक ओर धकेल दिया। मलबे के कारण लेटने या बैठने की गुंजाइश नहीं थी। शायद फुरसत भी नहीं थी।

देर तक यह गरम नाच होता रहा और तब जैसे सभी सहमकर थम गये, क्योंकि उनका कोई अफसर आ चुका था। टॉर्च की गहरी रोशनी में वह आगे बढ़ा। औरत को घेरे खड़े अधनंगे लोगों को उसने दोनों कुहनियों से एक ओर धकेला और हांफती हुई नंगी औरत के सामने जा खड़ा हुआ। धीरे-धीरे लोग बाहर निकल गये।

सुबह फिर वहीं उसी जगह, ठीक उसी तरह उस अफसर के साथ कुछ लोग आये—सादी पोशाक में कैमरों और टेपरेकॉर्डरों से लदे हुए। औरत ने अभी तक कपड़े नहीं पहने थे। अफसर के इशारा करने पर दो सिपाही

अन्दर से एक चादर जैसी चीज ले आये, जिसे उसे उढ़ा दिया गया। वह सिर झुकाकर नीचे फर्श पर बैठ गयी। एक साथ कैमरे कौंधने लगे। एक घर एक जल्दी-जल्दी फोटो लिये जाने लगे। एक आदमी ने रिकॉर्डर को चालू कर दिया। अफसर बता रहा था कि जब वह यहां पहुंचा, तो उसने देखा कि यह बेहोश औरत बाहर सड़क पर पड़ी हुई थी। दुश्मन ने इसका मकान लूट लिया और इसके साथ बलात्कार किया है। हम इसे अस्पताल भेज रहे हैं।

—अन्दाजन कितने लोगों ने बलात्कार किया होगा? किसी ने पूछा।

—कहा नहीं जा सकता। मेरा खयाल है कि कम से कम—यानी बहुत से लोग रहे होंगे। सैकड़ों भी रहे हो सकते है। आप हालत देखिये इनकी···

अफसर ने कहा और आगे बढ़कर उसने औरत की जांघों पर से चादर हटा दी। लोलुप कुतूहल के साथ लोगों की भीड़ आगे आयी और फिर जैसे भयभीत होकर पीछे हट गयी। चादर दुबारा वहीं लौटा दी गयी।

इसके बाद औरत के बयान रेकॉर्ड किये जाने लगे। पत्रकारों में से किसी ने पूछा—आपका नाम?

औरत ने आहिस्ता से नाम बताया। सुन कोई भी नहीं सका, लेकिन दुबारा नहीं ही पूछा गया, क्योंकि उन्हें मालूम था कि जो बोला गया है, वह रेकॉर्ड हो चुका होगा।

बयान रेकॉर्ड कर लिये गये और लोग भी बिदा हो गये। फिर उस भयानक वीरानी में वही दो बच रहे।

बहुत लम्बी खामोशी के बाद कोने में सिमटे पति ने आहिस्ता से पूछा —क्या तुम्हें बहुत तकलीफ हुई है? बहुत कष्ट हो रहा है?

औरत निःशब्द हंसी। थोड़े से अन्तराल के बाद बोली—इसमें मेरा क्या बिगड़ता था कि मैं ऐसा जाहिर करती, गोया मुझे सख्त चोटें आयी हों!

दोनों फिर चुप हो गये। एक अन्तराल के बाद पत्नी ने कहा—तुम्हारी इच्छा थी कि हम लोग नीचे तहखाने में लेटें। चाहोगे क्या?

—नहीं!

—क्यों?

पति ने कोई जवाब नहीं दिया। पत्नी उठकर,उसके करीब आयी। पास खड़े होकर उसने अपनी चादर उतार दी। पति ने उसकी ओर देखकर आंखें झुका लीं।

—चलो···उठो···

पति नीचे सिर झुकाये खामोश बैठा रहा। पत्नी घुटनों के बल उसके सामने बैठ गयी। पति के चेहरे को उसने अपनी हथेलियों में कोमलता के साथ थामकर ऊपर उठाया। काफी देर के बाद ही पति की आंखें उठीं। ठीक उसी वक्त पूरे जोर के साथ पत्नी ने उसके चेहरे पर थूक दिया। ढेरसा थूक ठीक नाक के बीचोंबीच चिपक गया।

लेकिन बस। इससे ज्यादा कुछ भी नहीं हुआ। पति ने अपना सिर और नीचे झुका लिया। पत्नी उठकर खड़ी हो गयी। अजीब निगाहों से उसने बाहर की ओर देखा, गोया तीसरी बार धमाके शुरू होने का इन्तजार हो!